आदिमाया सीता।।३।।

ऋषींच्या सभे मूर्ति शोभे बरी। तया मी सखे शोभतें नवरी।।ध्रु.।। मुनिवामभागीं असे लहानसा। सखे मी वरीन सव्यचा थोरसा।।१।।

पद १२६

(राग: यमन जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

कधीं घडविशी योग पुरुषोत्तमा। म्हणोनि सखे पूजिते मी

उमा।।२।। म्हणें माणिक पाह्नि विधिपिता। तया लुब्धली